झरोखा

दुनिया को नई नज़र से देखने का...

लेख योगदानकर्ता

मयुर पाटिल, ईशा गावस, ज्योत्स्ना मसो परबगावकर,
वेलेन्सी फराज, दिव्या केरकर, रेशमा मांद्रेकर

प्रकाशक
हिंदी विभाग, गणपत पार्सेकर कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन, हरमल

कुल पृष्ठ: ७, सबसे पहले प्रकाशित: २६ सितंबर २०१८

छोटी सी नाजुक कलि...

छोटी सी नाजुक कलि .....
किसी का सवाल बन गई
तो किसी का ख्याल बन गई
छोटी सी नाजुक कलि...
और फिर गुलाब बन गई

निखरता रबाब बन गई
गज़ल की किताब बन गई
छोटी सी नाजुक कलि...
और फिर गुलाब बन गई

आँगन की गुड़िया अब देखो
बड़ी सी मिसाल बन गई
छोटी सी नाजुक कलि...
और फिर गुलाब बन गई

घर की नवाब बन गई
आशिक का ख्वाब बन गई
हसीन माहताब बन गई...
छोटी सी नाजुक कलि...

और फिर गुलाब बन गई

मयुर पाटिल
बी. ए.
बी.एड. द्वीतीय वर्ष

मेरी पहली मोहब्बत....

कजरारी आँखों वाली
नीली नहीं पर काली-काली
उन आँखों में थी शर्म और हया
जो बिन बोले सब कुछ कर देती थी बयां
परेशानियाँ जब मुझ पर थी आती
तब वह मुझे अपने सीने से लगाती
फिर अपने प्यारे-प्यारे हाथों से
मुझे वह अपना गोद में सुलाती
ऐसी थी मेरी पहली मोहब्बत
पर आज न जाने मुझे अकेला छोड़कर
वह चली गई है कहाँ
उसके बिना सुना-सुना सा
लगता है ये जहाँ
उससे मुझे बस इतना ही कहना
कि मुझे सिर्फ उसके साथ है रहना....
मेरी पहली मोहब्बत
कोई और नहीं, वो थी मेरी प्यारी माँ
जिसके चरणों में था सारा जहाँ

ईशा गावस
बी. ए.
बा.एड. द्वीतीय वर्ष

अधुरा सपना...

भगवान ने दी जो सुरक्षित जगह
वो है मेरी माँ की कोख

कितनी नाजुक होती है वह जगह
कितनी होती है... खुशियाँ
वहाँ रहकर मजा लेने की
वहाँ रहकर खेलने की!

वहाँ मैने सपना देखा था
बेटी बनकर घर में खुशियाँ बिखेरने का
अपनी तुतली भाषा से मन हर लेने का
बदले में केवल प्यार बाँटने का

मैंने वहाँ एक सपना देखा खा
एक बहन बनने का
राखी के बंधन को निभाने का
एक बहना का कर्तव्य निभाने का
मैंने वहाँ एक सपना देखा था
एक माँ बनने का
अपनी ममता के आँचल से मातृत्व
बिखेरने का
एक माँ का कर्तव्य निभाने का

मैंने एक सपना देखा था
एक अद्यापिका बनने का
विद्यार्थियों का भविष्य संवारने का
एक शिक्षक का कर्तव्य निभाने का

कितने सपने देखे थे मैंने
माँ की कोख में रहकर
कितने सपनों को मुझे
सच करना था इस संसार में आकर

मेरे सपनों को आपने क्यों कुचल दिया?
इस संसार में आने से पहले
मेरा भविष्य आपने क्यों ध्वस्त किया?
मेरे इस संसार में आने से पहले

क्या इस सब का एक ही मतलब है?
क्योंकि मैं माँ की केख में पलती
बेटी थी, बेटा नहीं.....

ज्योत्स्ना मसो परबगावकर
बी. ए.
बी.एड. प्रथम वर्ष

हमारे घर की गणेश चतुर्थी

आती है गणेश चतुर्थी जब
सब होते हैं घर में इकठ्ठा तब
अगर कोई काम न बने किसीसे
तो खत्म होती है बात झगड़े से
तैयारी होती है बड़ी धूम-धाम से

गणेश जी आते हैं बड़े आराम से।
आगमन होता उनका बड़ी ही श्रद्धा से
सुबह सभी करते हैं पूजा, चेदन और फूल चढ़कर
पाँच दिनों की पाँच रंगीन बनती है रंगोलियाँ
बच्चे बुढ़े लेते हैं मजा फुलझड़ी और
आतिशबाजियों का
लड़के लेते हैं मजा आरती और भजन का
लड़कियाँ लेती मजा फुगड़ी और नाच-गाने का
होता है घर पर गणेश जी का आशीर्वाद
रहता घर पर घूप और अगरबत्ती का वास

चतुर्थी के पाँच दिन बीत जाते हैं खुशी और मजे से
पहले दिन का झगड़ा भी बदल जाता है प्यार में
चतुर्थी के पाँच दिन दिखता है घर भरा-भरा
गणपति विसर्जन के बाद घर लगता है
सूना-सूना

वेलेन्सी फराज
बी. ए.
बी.एड. द्वीतीय वर्ष

गोवा का शिग्मोत्सव

गोवा का शिग्मोत्सव हर गोवा वासी को उत्साह और उमंग से भर देता है। शिग्मोत्सव हर साल होली के दूसरे दिन से गुड़ी पड़वा तक मनाया जाने वाला 14 दिन का उत्सव है, जिसमे हर दिन गोवा के अलग-अलग गाँवों से लोगों द्वारा छोटे जुलूस के रूप में शहर के मुख्य स्थानों पर उत्सव मनाते है। शिग्मोत्सव को हम कार्निवाल का हिन्दुस्तानी संस्करण कह सकते हैं. भजन-कीर्तन के अलावा पौराणिक कथाओं पर आधारित झाँकियाँ भी जुलूस में शामिल होती हैं. कहा जाता है कि पहले लोग पौराणिक कथाओं पर आधारित झाँकियाँ के स्थान पर पौराणिक कथाओं पर आधारित नाटक करते हुए चलते थे।

शिग्मोत्सव का गोवा की आजादी से वही संबंध है जो लोकमान्य तिलक ने गणशोत्सव का भारत की आजादी की लड़ाई से था दरअसल गोवा के स्वातंत्रता संगाम सेनानीयों ने लोगों को जोड़ने के लिए शिग्मोत्सव को पुर्तगालियों के सलाना कॉर्निवाल की तर्ज पर रचा गया ताकी पुर्तगालियों को लगे कि उनकी ही संस्कृति को आगे बढ़ाया जा रहा है।

सभी के दिलो दिमाग में गोवा की छवि पाश्चात्य संस्कृति के हैंगओवर से अलसाए शहर की रहती है. पर यहाँ आने से अलग ही नजारे का दर्शन होता है। भारतीय संस्कृति के रंग में रंगा गोवा अपनी एक अलग पहचान बनाता है।

भक्तिभाव से झाँकियों को प्रणाम करते गोवावासियों के बीच में मेरी नजरे उस गोवन को ढूंढ रही थी जो राजकपूर की बॉबी फिल्म के प्रेमनाथ के किरदार की तरह बात-बात में हिप फ्लास्क से रम निकालकर पीता है और सही-गलत अंग्रेजी में मच्छी, नाव, और मुहब्बत की बातें करता है, लेकिन यह तो शिवाजी महाराज का गोवा है, मराठी संतों का गोवा है, जो महाराष्ट्र के किसी भी आम कस्बे के जैसा ही था . जुलूस को देखने आये हजारों लोगों के चालचलन, कपडे, बातचीत और जीवन, विश्वासों में मैं पुर्तगाल ढुंढ रहा था, पर हैरान की बात थी की वह कहीं नहीं था।

लगभग 400 वर्ष राज्य करने के बाद भी पूर्तगाली गोवा में केवल चर्चों के आर्किटेक्चर के सिवा कुछ नहीं बचा है. क्योंकि गोवावासी अपनी मिट्टी से जुड़े हुए हैं, अपनी परंपरा को जिन्दा रखे हुए हैं। तभी तो केसरिया रंग के किसी सैलाब की तरह आते शिग्मोत्सव का जुलूस अप्रतिम और अविस्मरणीय है।

दिव्या केरकर
बी. ए.
बा.एड. प्रथम वर्ष

हरिशंकर परसाई की कहानी

भोलाराम का जीव का नाट्य रूपान्तरण

भाग 1

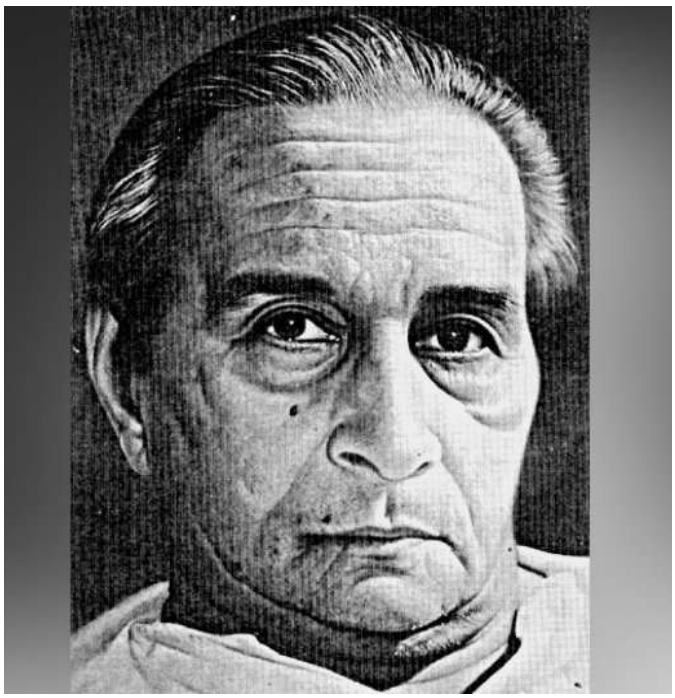

(धर्मदास अस्वस्थ बैठे थे, सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ हुए रजिस्टर का पन्ना पलट पलट कर देख रहे थे। आखिर में उन्होंने खींझकर रिसिटर इतने जोर से बेद किया कि मक्खी चपेट में आ गई। उसे निकालते हुए वो बोले -)

चित्रगुप्त - "महाराज, रिकॉर्ड में सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले शरीर त्याग दिया और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ था, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।"

यमराज - "और वह दूत कहाँ गया?"

चित्रगुप्त - महाराज - वह भी लापता है।

(इसी समय द्वार खुलता है और यमदूत बदहवास-सा वहाँ आता है। उसका चेहरा परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो या है।)

चित्रगुप्त - (चिल्लाकर) अरे! तुम कहाँ थे इतने दिन? भोलाराम का जीन कहाँ है?

यमदूत - (हाथ जोड़कर) दयानिधान, मैं कैले बताऊँ कि क्या हो गया? आज तक मैं धोखा नहीं खाया, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चक्मा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लेक की यात्रा प्रारंभ की, नगर के बाहर जैसे ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु तरंग पर सवार हुआ वैसे ही वह मेरे चंगुल से छुटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला।

धर्मराज - (क्रोध से) मुर्ख जीवों को लाते लाते बुढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुम्हें चकमा दे दिया।

यमदूत - (सिर झुकाकर) महाराज, मेरी सावधानी में विल्कुल कसर नहीं थी। मेरे उन अभ्यस्त हाथों से अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छुट सके, पर एस बार तो कोई इंद्रजाल ही हो गया।

चित्रगुप्त - महाराज, आजकल पृथ्वी में इस प्रकार का व्यापारबहुत चल रहा है। लोग देस्तों को फल भेजते हैं और रास्ते में ही रेल्वे कर्मचारियों द्वारा उड़ा लिए जाते हैं। होजरी के पार्सलों के मोजे रेल्वे.... अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे के डिब्बे रास्तें में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है राजनैतिक दलों के नेता विरोधी दलों के नेता को उड़ाकर कहीं बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के किसी विरोधी ने तो उसके जीव को नहीं उड़ा लिया?

धर्मराज - (व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखता हुआ) तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र हो गयी है। भैली भोलाराम जैसे नगण्य आदमी से किसी को क्या लेना देना?

(इसी समय कहीं से घुमते फिरते नारद मुनि वहाँ पहुँचे और धर्मराज को गुम-सुम बैठा देखकर बोले)

नारद मुनि - क्यों धर्मदास, कैसे चिंतित बैठे हो? क्या नर्क में निवास स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई?

धर्मराज - वह समस्या तो कब की हल हो गई, मुनिवर! समस्या दूसरी ही है... भोलारे मान के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई, उसके जीव को यह दूत लाने गया था, लेकिन वह रास्ते में दूत को चकमा देकर भाग गया। ऐसा होने लगा तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।

नारद मुनि - उस पर इन्कम-टैक्स जो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक दिया हो।
चित्रगुप्त - इन्कम होती तो टेक्स होता!... भुखमरा था।
नारद मुनि - मामला बड़ा दिलचस्प है। अच्छा मुझे नाम पता तो बताओ, मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।
चित्रगुप्त - (रजिस्टर देखकर) भोलाराम नाम था उसका, जबलपुर शहर के धर्मापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार सहित रहता था। उसका पत्नी, जो लड़के और एक लड़की थी। उम्र लगभग पैंसठ साल। सरकारी नौकरी थी, पाँच साल पहले ही रिटायर हो गया था। उसने एक साल से मकान का किराया नहीं दिया था, इसलिए मकान मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवा दिन है।तुम्हें उसके परिवार की तलाश में काफी घुमना पड़ेगा।

भाग 2...

(माँ बेटे के सम्मिलित क्रंदन से नारद मुनि भोलाराम का मकान पहचान गए)
नारद मुनि - (द्वार पर जा कर आवाज़ लगाई) नारायण..... नारायण!
लड़की - आगे जाओ, महाराज।
नारद मुनि - मुझे भिक्षा नहीं चाहिए, मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ जरा बाहर भेजो बेटी।
(भोलाराम की पत्नी बाहर आती है)
नारद मुनि - माता भोलाराम को क्या बीमारी थी?
पत्नी - क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गए नौकरी से रिटायर हुए, पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पंद्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब नहीं आता था या आता तो यही कि तुम्हारी पेंशन पर विचार किया जा रहा है। इन पाँच सालों में घर के बर्तन, गहने सब बिक गए, घर में कुछ भी नहीं बचा। चिंता और भूख से उन्होंने अपना दम तोड़ दिया।
नारद मुनि - क्या किया जा सकता है..... उनकी उम्र ही उतनी थी।
पत्नी - ऐसा मत कहो, महाराज! उम्र तो बहुत थी। पचास-साठ रूपया महिना पेंशन मिलती तो गुजारा हो जाता। पर क्या करें उनके रिटायर होने के बाद फूटी कौड़ी भी नहीं मिली।
(दुख की व्यथा सुनने की फूर्सत नारद जी को नहीं थी इसलिए झट से मुद्दे पर आए)
नारद मुनि - माँ यह बताइए कि यहाँ उनका किसी से विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो?
पत्नी - लगाओ तो महाराज बाल-हच्चों से ही होता है।
नारद मुनि - नहीं, परिवार के बाहर भी हो सकता है, मेरा मतलब कोई स्त्री.....।
(स्त्री ने गुर्राकर नारद जी की ओर देखा)
पत्नी - बको मत, महाराज! साधु हो कोई लुच्चे-लफंगें नहीं हो। ज़िंदगी भर उन्होंने किसी दूसरा स्त्री को आँख उठाकर नहीं देखा।
नारद मुनि - (हंसकर) हाँ, तुम्हारा सोचना ठीक ही है। यही भ्रम अच्छी गृहस्थी का आधार है।अच्छा माता मैं चला।
(व्यंग्य समझने की असमर्थता ने नारद को सती के क्रोध की ज्वाला से बचा लिया।)
पत्नी - महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरूष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रूकी हुई पेंशन मिल जाए। इन बच्चों का पेट भर जाया करेगा।
नारद मुनि - (दया से) साधुओं की बात कौम मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं! फिर भी मैं सरकारी दफ्तर जाकर कोशिश करूँगा।
(वहाँ से निकलकर नारद सरकारी दफ्तर पहुँचे, कमरे में पहले ही बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के केस के बारे में बात की।)
बाबू - भोलाराम ने दरख्वास्तों तो भेजी थी, पर उनपर वजन नहीं रखा था, इस लिए कहीं उड़ गई होगी।
नारद मुनि - भई, ये बहुत से पेपर वेट तो रखे हैं। इन्हें क्यों नहीं रख दियों?
बाबू - (हंसकर) आप साधु हैं आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबता..... खैर आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।
(नारद उस बाबू के पास गए, उसने तीसरे के पास भेजा, तासरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवे के पास। जब नारद पच्चीस-तीस बाबुओं और अफसरों के पास घूम आए, तब एक चपरासी ने कहा)
चपरासी - महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गए। आप अगर साल भर भी चक्कर लगाते रहे जोभी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया तो अभी कां हो जाएगा।
(नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे, बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, नारद जी सीधा कमरे में घुसे, बिना विजिटिग कार्ड के आया देख... साहब नाराज हो गए।)
साहब - इसे कोई मंदिर-वंदिर समझ लिया है क्या? धड़धड़ाते हुए चले आए, चिट क्यों नहीं भेजी?
नारद मुनि - कैसे भेजता, चपरासी तो सो रहा है।

साहब - क्या काम है? (रौब से)
(नारद जी ने भोलाराम के पेशंन-केस के बारे में बताया।)
साहब - आप हैं वैरागी, दफ्तरों के रीति-रिवाज नहीं जानते, असल में भोलाराम ने गलती की। भई यह भी एक मंदिर है, यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है, भेंट चढ़ानी पड़ती है।आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही है। उनपर वजन रखिए।
(नारद जी ने सोचा कि फिर यहाँ वजन की समस्या खड़ी हो गयी।)
साहब - भई, सरकारी पैसे का मामला है, पेंशन का केस वीसों दफ्तरों में जाता है। देर लग जाती है, हजारों बार एक ही बात को हर जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। हाँ जल्दी भी दो सकती है, मगर.... (साहब रूके)
नारद मुनि - मगर क्या? **साहब** - (कुटिल मुस्कान से) मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं जैसे आपकी सुन्दर वीणा है, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त में रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना-बजाना सीखती है, यह मैं उसे दे दूगाँ। साधुओं की वीणा तो बड़ी ही पवित्र होती है। लड़की जल्दी संगीत सीख गई तो उसकी शादी हो जाएगी।
(नारद जी अपनी वीणा टेबल पर रखकर)
नारद मुनि - यह लीजिए, अब जरा जल्दी उसकी पेंशन का ऑर्डर निकाल दीजिए।
(साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घंटी बजायी। चपरासी हाज़िर हुआ।)
साहब - (हुक्म दिया) बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ।
(थोड़ी देर में चपरासी भोलाराम की सौ-डेढ़ सौ दख्वास्तों से भरी फाइल ले आया। साहब ने निश्चित करने के नाम पुछा)
नारद मुनि - (ऊँची आवाज में) भोलाराम।
(सहसा फाइल में से आवाज आई)
भोलाराम की आत्मा - कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है क्या? पेंशन का ऑर्डर आ गया?
(साहब डर कर कुर्सी से लुढ़क गए, नारद जी भी चौक गए पर दूसरे ही क्षण बात समझ गए।)
नारद मुनि - भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?
भोलाराम की आत्मा - हाँ!
नारद जी - मैं नारद हूँ, मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो स्वर्ग में तुम्हारा इंतजार हो रहा है।
भोलाराम की आत्मा - नहीं.. मुझे नहीं जाना, मैं तो पेशम की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन सगा है, मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता.....

---------- समाप्त----------

रेशमा मांद्रेकर
बी. ए.
बी.एड. द्वीतीय वर्ष

बुढ़ापे का दर्द

बुढ़ापे का दर्द
रात दिन बहाना पसीना
घर के मालिक का सीना।
अपने हर सपनों की दी कुरबानी
घर सजाने में बीती उनकी जवानी।
लेकिन अब बुढ़ापे में
भूल जाते हैं उनके ही, उनकी मौजुदगी।
गुस्सा आता उतारते उनपर
करते उपयोग उनका, रखते कबाड़खाने में
नहीं करते याद कभी उन्हें।
जब हो अकेले लगता है उन्हें भी डर
क्यों नहीं सोचते हमारी भी होगी उमर

वेलेन्सी फराज
बी. ए.
बी.एड. द्वीतीय वर्ष